

॥ अथ एकोनसप्तसितमांच्चाबः ॥ Chapter-69

| | | |
|----------------|---|---|
| वसिष्ठ उवाच :- | पृष्ठा राजन् पुबक्षापि गोत्रादि कुलक्षणम् ॥ | |
| | देव्यादिकुलदेवाश्च विष्णुणां कुलदेवताः ॥ | १ |
| | गात्रे सनकसे देवी वस्त्रानां न नदशर्म च ॥ | |
| | वत्सश्च वस्त्रदेवाश्च जननीलो विनायकः ॥ | २ |
| | आत्मिकैङ्गरश्चमुख्य आनन्दमैश्वरः कुरु ॥ | |
| | भारद्वाजे वन्दुक्षणी देवी च शिव शर्म च ॥ | ३ |
| | दुधिविनायकां देवो यज्ञरामैश्वरः सदा ॥ | |
| | नवलरंबैश्वरश्चमुख्य ईशानी भैरवहृक्षुले ॥ | ४ |
| | पाराशरे बट्यक्षणीदेवी शर्म च ब्रातकः | |
| | नर्मनायके देवो यज्ञ चित्रैश्वरः कुरु ॥ | ५ |
| | पारैश्वरशिखां देवः सिद्धिलाला च भैरवः ॥ | |
| | कौशिके कमला देवी मवशर्म सदा कुरु शा ॥ | ६ |
| | स्वगीविनायकां देवो यज्ञा कौमैश्वरस्तथा ॥ | |
| | कृष्णैश्वरश्चमुख्य भैरवः काल एव च ॥ | ७ |

-०-

१ ए बट्यक्षणीदेवीशर्म

२ ए वा

३ हशान भैरवो कुरु ॥

- हत्त्वगांवे बालगारी मित्रर्षम् कुले नृप ॥ १
 गनग्रियो यजा देवां गांवत्सलविनावकः ॥
- दुधेश्वरस्त्रभस्म्भूश्च कंगलमूर्तिस्तु भैरवः ॥ २
 नागिन्योषमन्धवे स्थाप्तूतशर्मा वदन्ति च ॥
- सिद्धि विनायकां देव उम्यायज्ञाकस्तन्या ॥
 भूमीवेश्वरफूद्रश्च भैरवां बटुवो दुले ॥ ३०
- यौगैश्वरी काश्यपे च प्रातशर्मा निरन्तरम्
 मृत्युविनायकां देवां यज्ञाश्च लघमणीश्वरः ॥ ३१
- काश्यपेश्वर शंभुश्च जटिलो भैरवः दुले ॥
 गौतमे निम्बजा देवी दास शर्मा कुलेषुवम् ॥ ३२
- साध्यविनायकां देवो दम्यन्तश्च यज्ञाकः ॥
 चंद्रेश्वरमहादेवां भैरवां ग्रामपालकः ॥ ३३
- जीर्णकरी च शापिद्वये शामशर्मा वदन्ति च ॥ ३४
 उदयविनायकां देव त्रिशूलीचैव यज्ञाकः ॥

| | |
|---|----|
| ज्वे श्वरमहादेवोऽलितांगीश्वर पैरवः ॥ | |
| वन्द्रासे च महालक्ष्मी नागश्चैशुभ्युः कुले ॥ | १५ |
| दृष्टिराजगणीशोपि दुले च दैययक्षाकः ॥ | |
| प्रसुतेश्वर शम्भुश्वरैर्वाँ विज्ञां दुले ॥ | १६ |
| चामुच्छा ठौड्बान्नौत्रे गुप्तश्चर्म वदन्ति हि ॥ | |
| कारिविनायकौ देवौ यक्षाश्च विनेश्वरः ॥ | १७ |
| भूतेश्वरौ महादेवौ जुञ्जालैर्वाँ कुले ॥ | |
| खरानना मृग्दले च घोस्त शर्म बदेत् सुधीः ॥ | १८ |
| बार्यदिनायकौ देवौ लघीकायक रत्था ॥ | |
| गंगेश्वरश्चशम्भुश्वरैर्वाँ देव नत्तुलहा ॥ | १९ |
| सुरभि बगस्तली देवीदत्तशर्म कपिष्ठलैः ॥ | |
| रेत उपयोगिनराजौपि दुद्दरौ बज्ञकौ तृष्ण ॥ | २० |

| | |
|---|----|
| नागस्वरो महादेवो रक्तांगक्षमैर्बोदुले ॥ | २१ |
| हरिसे दत्तचण्डी देवशमशुभं बुले ॥ | २१ |
| अर्जुनविनायको चैवः सूर्यकाको वयेदुल्लः ॥ | २२ |
| जागेश्वरः लिंगो राजन् पैरनो बटधारकः ॥ | २२ |
| श्रीमाल हृष्णा देवा विप्राणां कुलदेवताः ॥ | |
| गोत्रे चतुर्थी राजन् अथिता इच्छुधक घृथक् ॥ | २३ |
| श्रीगोविल्लास्त्रिय इवीरबश्च अक्षकः ॥ | |
| वेदाः पुवरा गणश्वल पैरवश्व तथा नृष ॥ | २४ |
| वश्ची चैव प्रदश्यन्ते श्रीमालं वस्ती द्विजात्म् ॥ | |
| यद् दस्त्वाहं तु विप्राणां कुलं विजायते धूम् ॥ | २५ |
| अवहारं च श्रिया क्षेत्रे चक्रिमध्ये पूर्वती ॥ | २६ |
| तत्राश्चक्षु भ्रद्यते ॥ प्रथमश्वको ० | |
| (१) बौफाशत्या २० त्रवाढीगाधे ३- त्रवाढीपद | |
| ४- त्रवाढीकाणांडा ५- जोफाटोकर ६- त्रवाढीमेर ॥ २७ | |

(५८३)

द्वितीय

| | | |
|-------------------|--|----|
| द्वितीय शब्द की - | १- ब्राह्मी ^१ स्त्रीजर २- ब्राह्मीवतर ३- बाराजाजडोला ४ व्यासउबलीया ५- व्यासवाकुलिया ६- बारामंट ॥ | २८ |
| तृतीय शब्द - | १- ब्राह्मीलौहातर २- ब्राह्मीलताउव ३- ब्राह्मीकाशिष्यि ^२ ४ ब्राह्मीषावधीन ५- ब्राह्मीउषलिया ६- दबेगोदा ॥ | २९ |
| चतुर्थ शब्द :- | १ जौशीचण्डेशा २- ब्राह्मीनीया ३- दबेभनावतर ॥ ४ बारापेटा ५- ब्राह्मीटोकर ६- ब्राह्मीसांगला ॥ | ३० |
| पञ्चम शब्द :- | ब्राह्मीटोकर २- ब्राह्मीबाकुलिया ३- जौफाभाँपल ॥ ४ लावस्तीकाणांटा ५- ब्राह्मीशत्या ६- व्यासगावे ॥ | ३१ |
| षष्ठम शब्द :- | १ दबेहाडी २- दबेकर्णीया ३- लावस्तीबग्निहोत्री ४ ब्राह्मीजौसलिया ५- जौशीपंचलिया ६- ब्राह्मीकच्छिडा ॥ | ३२ |
| सप्तम शब्द :- | जौफाबाकुलिया २- व्यासभाँपल ३- ब्राह्मीनारेचा ॥ ४- जौशीपांडिजा ५- दबेजंपाउजा ६- दबेकौचर ॥ | ३३ |
| अष्टम शब्द :- | १- जौशीभाँपल २- व्यासपुरेचा ३- जौका नजुखा ४- व्यासनबलखा ५- ठाकुरनरेचा ६- दबेवैलिया ॥ | ३४ |

-०-

१ ए क्रिती

२ ए नाशक्यि

३ ए सांगडा

(५८४)

| | | | | |
|--------------------|---|--|---|----|
| नवमश्चक्ती :- | १- ब्राह्मीउनामहीया ४- वाराकिंडीया | २- ब्राह्मीबाघडीया ५- जोशीनरतंचा | ३- दबेष्टाटीया ६- लौफाबाघलिया ॥ | ३५ |
| दशमश्चक्ती :- | १- ठासुरलपिंड <small>ठोड़ा</small> ४- लाचडीया | २- ठासुरम्बा ५- ब्राह्मीबाटमुहालिया | ३- दबेष्टात्तमीया ॥ ६- ब्राह्मीजाजाँला ॥ | ३६ |
| एकाशश्चक्ती :- | १- दबेष्टुनक्ताँढ ४- दबेलापसा | २०- दबेनारेला ५- दबेष्टुहत्वारणोचा | ३- दबेष्टाठक ६- दबेष्टकर | ३७ |
| द्वादशश्चक्ती :- | १- दबेउनामषा ४- दबेक्षितीया | २- दबेमनोहिया ५- दबेपांचानेसिया | ३- दबेक्षलबडा ६- दबेशंकलबाडिया ॥ | ३८ |
| त्र्योदशश्चक्ती :- | १- जोशीगांतमीया ४- दबेबातिर | २- दबेधार्घलबाढीया ५- ब्राह्मकोवर | ३- वारापणह्या ॥ ६- दबेक्षितीया ॥॥ | ३९ |
| चतुर्दशश्चक्ती :- | १- दबेबातर ४- दबेनणकोया | २- दबेष्टुराणाचा ५- दबेलेबाढीया | ३- दबेजीबाणोचा ॥ ६- दबेसाढीया ॥ | ४० |

सतत्त्वक्तीतु श्रीमालै द्विजानां बत्ते नमः

१ ए दबेजीबाणोजा

वृणु राजन् प्रवद्यामि विधुराणा च हिताय वै ॥
 चतुरशीत्यकटंका गौवे गौवे धूधू धूधू ॥
 तथा पुवर्बेदार्थं शासास्येव विशेषतः ॥

सन्क्षण गांत्रस्व :- त्रिवाढीटोकर, ओफा टोकर, त्रिवाढी बाडुलिया
 व्यास बाडुलिया, बोडा बाडुलिया,- दब्मटकर ॥
 दब्डुनामणा, त्रिवाढीशांगडा, त्रिवाढी जैसलिया,
 व्यास डब्लिया, हत्यकटंकाः सहौत्र
 गृहमद, गाच्छमद, हत्यकटः पुवराः कृत्यजुः
 सामवेदाः आश्वलायनी माच्छन्दिनी कांथमीशासाश्च ॥

मारदाज गांत्रस्व- बौमिरस बाढीस्पत्य मारदाज हत्यकटः पुवराः
 कृत्यजुः सामार्थ्यवेदाः आश्वलायनी माच्छन्दिनी ॥
 बौधुमी स्वान्तरायगी शासाः लोका भौपल,
 व्यास भौपल, त्रिवाढी भौपल, जौशी भौपाल,
 त्रिवाढी उनामडा, त्रिवाढी मिया, त्रिवाढी चौणाशर

(५८६)

त्रिवाडी निणाकोङ्गा, लोका नवलखा, व्यास नवलखा,
दबेका लिथा^{जा पर}, दबेनहरेचा, बौहारा पेटा, हत्थबटंकाश्च ॥

पाराशरगांत्रस्य :-

वसिष्ठ शनि धाराशर इतित्रयः त्रिवराः कृष्ण सामवेदौ ॥
आश्वलायनी कौथुमी शारं त्रिवाडी, व्यास अस्य, त्रिवाडी नारेचा,
जौशी जपलिया, बैका चण्डशा, हत्थबटकाश्च,

कौशिक गांत्रस्य :-

बिश्वामित्र दैवराज उद्गु इतित्रयः त्रिवराः
कृष्णसामवेदौ, आश्वलायनी, कौथुमी, शारं, बैका शत्या, त्रिवाडी शाल्या
आवस्ति काणांडाः जौशी नरतेचा, त्रिवाडी काणांडा,
ठाकुर नरतेचाः हत्थटकाश्च ॥

वत्ससूनांत्रस्य :-

मृगुच्छवन बौर्ज आप्नवान् नामदण्ड इति वंचपूर्वराः ॥
यजुः सामवेदौ माघदन्तिनी कौथुमी शारं त्रिवाडी दशोतरा ,
आवस्ति जपिनहात्री, दबे कणिकासिया, जौशी
पाडेचा, त्रिवाडी सधारत्र, हत्थ-बटकाश्च ॥

(५८७)

ॐ पूर्ण न्यवगांत्रस्य :- ओमपूर्णव हत्येकः प्रवरः, सामवेदः, कौथुपीशाला,
ऋाडीमेर, हत्ये की बट्टकर्श्च ॥

काश्वरणांत्रस्य :- काश्वर वत्सानेत हतित्रयः प्रवराः सामार्थ्य ॥
हति द्वौ वेदों लौकुमी, स्वान्तरायणी, शासे ऋबाडी जाजडौला ।
ऋबाडी आद्यिाधि, ऋबाडी काशभित्तवाडिया ॥
ऋबाडी बट्सुहालिया, जौशी चण्डेशा, जौशी धावडौत्र,
जौशीषंचलीधा, बौरा भौमिट, ऋबाडी लौहर ,
ऋबाडी बाचडीया, ऋबाडी लरचंडा ॥
बौरा जाजडौला, हत्यबट्टकार्श्च ॥

गौतमगांत्रस्य:- गौतिष्ठ गांगिरस गौतम हतित्रयः प्रवराः, अजुवेदः :
साध्यन्विद्विनी शाला, दबेल्पाउवा, दबेशांचलवाडिया,
ठाकुर लापशा, दबे रंकतोड, दबे ग्रांतम,
जौशी गौतम, हत्यबट्टकार्श्च ॥

शांघल गौवस्त्रः-

असेल्य देवल शापछल इतिक्र्यः प्रवरा: बजुबैद,
इत्येकोंजेद, माध्यन्दिनी शासा दबैकिडीया, बौरा किडिया,
बौरा पैटा, धांधलवान्दिया, बौरा षण्डिया, हत्यपूर्णाश्च ॥

चंडास गौवस्त्र :-

ग्राविक्षा, गविष्ट, घूर्णे तीर, इति क्र्यः प्रवरहः बजुः ॥
सामवेदो माध्यन्दिनी कौथुमी शासा दबै अरिणाया हाढी, दबै ॥
देलवाडिया, दबै बांतर, जाशी बांतर, हत्यबट्टकाश्च ॥

लौड्वान् गौवस्त्रः-

जाँगिरेस बौतिथ्य लौड्वान् इतिक्र्यः प्रवरा: ,
बजुबैदो माध्यन्दिनी शासा दबै काँचर च्वास काँचर +।
कुने पाठक हत्यबट्टकाश्च ॥

मुग्दल गौवस्त्रः-

जाँगिरेस भारम्ब माँजुद्ल इति क्र्यः प्रवरा: बजुबैदो,+
माध्यन्दिनी शासा दबै बाडिया, दबै चाँथानैसिया,
दबै छिसीया, दबै गोधा, हत्यबट्टकाश्च ॥

कर्षिङ्गल गौवस्त्रः-

वसिष्ठ भारदाज ल्लपृष्ठद हतिक्र्यः प्रवरा: कर्षजुः
सामवेदा बाङ्गलावनी, माध्यन्दिनी, कौथुमी, शासा: ॥

(५८)

दवेजीकाण्डैजात् पनांलिया, दवै दलबटा, दवै मुतारमणौचा,
दवेकुमाणौचा, दवेकाणौचा, दवै लाडिया, ठाकुर मिया,
आँफा बाधलिया, दवै पनाउत्र, ठाकुर दपिंजल, हत्यवट्काल ॥

हरिलस गोव्रस्वः- हरिलसत्येकः प्रवरः कृग्वेदः आश्वलायनी शासा,
अौका आङ्गडीया, हत्येकाऽवर्टक्षिच ॥

तत्र लाङ्गलायनी शासा कृग्वेदस्व, यजुर्वेदस्य यात्यद्विनी +
सामवेदस्व कौथुमी, तथवेदस्व स्वान्तरायणी ,
चैति कृग्वेदस्वापस्तम्भसूत्रं यजुर्वेदस्व कात्यायनं ,
सामवेदस्व लाट्यायनमर्थवेदस्वावर्टकाङ्गेति ॥

कतुर शीत्यवट्कार्गोव्राण्डा तु चतुर्दश
मदा ने कथिता राजून् श्रीमाले च यथा भूबन् ॥

सर्वं चतुर्वेदविदः श्रीमाले तु द्विजा । अनसन् ,
लष्टो कृग्वेदिका संखा चाटविंशतिस्तु याजुणी ॥

-०-

१९ भूबन्

२० दाज्

यंचाना ख्यु पंचाश्त् सामग्रा च भवेन्तुष ॥
 यंसत्त्वा तु श्रीमाले बसेच् चार्क्षिदिकी ॥
 एतत्प्राणं विप्राणामबट्टक्षेत्रदा ।
 कृष्णेदि सप्तसाहस्रं बाजुणां हादशं सूतम् ॥
 दाविंशति स्तु साहस्रं बसेतत्रहु सामग्रम् ॥
 चतुःसहस्रं माधवं विप्राणां श्रीनकेलेन ॥
 एतत्प्राणाणि की संख्या बसन्ति तत्र वै पूज्यम्
 अंगोष्ठिणात् सहितचतुर्दशिकासत्त्वा ॥
 बसन्तस्तु द्विजास्तत्र धर्मशास्त्रेण संयुताः ।
 इतर्ये कथितं राजहु भावात्म्यं विप्रसंज्ञम् ।
 रेत् वच्छ्रुत्वा भावो भवत्वा प्रज्ञावान् जायते सदा ॥

-३-

हति श्री स्वप्नपुराणी एवा शीति साहस्र्यां संदित्ताणां
 लृतीय चरित्यै द्वात्तविभागे श्रीमाल माहात्म्ये विप्राणां त्रादि
 लक्षणान्नाम एकाने सप्ततितपांच्याव ॥

१ ए वा

२ ए यच्छ्रुता